International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कृत्रिम बुद्धिमता का नागरिक अधिकारों पर प्रभाव

अमित कुमार[1], प्रोफेसर प्रीति पाठक[2]

[1]शोधार्थी, साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश), महात्मा ज्योतिबा फूले रोहिलखंड विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश)

[2]शोध पर्यवेक्षक, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान , साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश), महात्मा ज्योतिबा फूले रोहिलखंड विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक युग की क्रांतिकारी खोज कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रभावशाली शक्ति के बारे में चर्चा की गई है, विशेषतया नागरिक अधिकारों के साथ–साथ मानवाधिकारों के सामने उत्पन्न होने वाली समस्याओं के बारे में। एआई के लिए आवश्यक आंकड़ों से किस प्रकार पक्षपाती उपकरण बनाए जा सकते हैं जो चरित्र में भले ही पक्षपाती ना प्रतीत हों किंतु उनका उद्देश्य पक्षपाती हो सकता है। एआई से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु सार्वभौमिक नियम बनाने की आवश्यकता है।

एआई को कार्य करने के लिए आंकड़ों की आवश्यकता होती है। यह आंकड़े समाज में वर्तमान में उपस्थित स्थितियों पर निर्भर करते हैं जहां कमजोर, गरीब, महिलाएं व शोषित लोगों की दिनचर्या उन्हें समाज के बाकी हिस्से स अलग करती है जिसमें कमजोर समूह द्वारा मजबूत आर्थिक स्थिति के अभाव में अधिकारों का समुचित प्रयोग संभव नहीं हो पता है। इस प्रकार की परिस्थितियों में लिए गए आंकड़ों का उद्देश्य भले ही पक्षपाती नहीं हो किंतु पहले से उपस्थित स्थिति के आंकड़े एआई को पक्षपाती बना सकते हैं। जिससे यह तकनीक समाज के एक बहुत बड़े वर्ग के भविष्य को हानि पहुंचा सकती है।

मुख्य शब्द एआई कृत्रिम बुद्धिमत्ता हाइरव्यू एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन प्रबंधन कंपनी है जिसका मुख्यालय साउथ जॉर्डन, यूटा में है। पल्स ऑक्सीमेट्री रक्त ऑक्सीजन संतृप्ति की निगरानी के लिए एक गैर–आक्रामक विधि है। एआई वॉयस क्लोनिंग, जिसे वॉयस सिंथेसिस या वॉयस मिमिक्री के नाम से भी जाना जाता है, एक ऐसी तकनीक है जो किसी विशिष्ट व्यक्ति की आवाज का अनुकरण करने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग करती है। सीओएमपीएएस वैकल्पिक प्रतिबंधों के लिए सुधारात्मक अपराधी प्रबंधन प्रोफाइलिंग चैट जीपीटी ओपनएआई द्वारा विकसित कृत्रिम बुद्धिमत्ता चैटबॉट जनरेटिव एडवर्सरीयल नेटवर्क मशीन लर्निंग फ्रेमवर्क का एक वर्ग है और जनरेटिव एआई तक पहुंचने के लिए एक प्रमुख फ्रेमवर्क है।

प्रस्तावना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान समय में अधिकांशतया व्याप्त है। हमारे मोबाइल फोन से लेकर शॉपिंग मॉल तक, स्वास्थ्य से लेकर रक्षा के क्षेत्र में, ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं रहा है जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता को प्रबल रूप से अपनाने की बात नहीं कहीं जा रही हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य द्वारा यांत्रिक रूप में विकसित बुद्धिमत्ता है जिसे कोडिंग व हार्डवेयर के सहयोग से विकसित किया जाता है। "कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक मशीन आधारित प्रणाली के रूप में वर्णित किया जाता है। इसके द्वारा भविष्यवाणियों, सामग्री, सिफारिश या निर्णय जैसे परिणाम उत्पन्न करने के लिए आदान का उपयोग किया जाता है। एआई प्रणाली भौतिक एवं आभासी दोनों वातावरण को प्रभावित करने में सक्षम है।"(1)

"विगत वर्षों में, भारत ने स्वास्थ्य, सेवा और वित्त से लेकर शासन और कानून प्रवर्तन तक विभिन्न क्षेत्रों में एआई प्रौद्योगिकियों का तेजी से प्रसार देखा है। फिर भी नवाचार की इस लहर के बीच एक मार्मिक अहसास उभरता है : मानवाधिकारों को आगे बढ़ाने या बाधित करने के लिए एआई की क्षमता भारत के सामाजिक ताने–बाने से गहराई से जुड़ी हुई है।"(2) कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य द्वारा एक साथ अनेक कार्यों को समन्वित करके वांक्षित निर्णय कुछ ही समय में प्रदान कर देता है। सुरक्षा हो या स्वास्थ्य सभी जगह

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य के कार्य में सहयोगी बन रहा है। एआई को जिस तीव्रता से जीवन के बहुआयामी हिस्से में स्थापित किया जा रहा है, उसे विभिन्न प्रकार की चिंताएं भी स्पष्ट हो रही हैं। स्पष्टतया देखा गया है कि विकसित या नवीन तकनीक का प्रयोग अधिकांशतया संपन्नशाली विकसित देशों द्वारा किया जाता है। इससे समाज में संपन्नशाली व निर्धन के बीच पहले से उपस्थित खाई और बढ़ने की आशंका है। एआई की सहायता से जहां कार्यों के निष्पादन में तीव्रता आई है वहीं इससे लागत की कमी, समय की बचत जैसे चरों ने एक आम व्यक्ति को भी सरकारी सहायता विशेष कर न्यायिक सहायता प्राप्त करने में सहायता प्रदान की है।

जहां एआई का प्रयोग मनुष्य को उसके कार्यों में सहयोगी सिद्ध होता है वहीं नागरिक अधिकारों की रक्षा में भी एआई एक शक्तिशाली नियामक सिद्ध हो सकता है।

"एआई तकनीक का उपयोग आम तौर पर इंसानों द्वारा किए जाने वाले कामों को पूरा करने के लिए किया जाता है। हालांकि ये उभरती हुई तकनीकें उपयोगी उपकरण हो सकती हैं, लेकिन इनके परिणामस्वरूप गैरकानूनी भेदभाव भी हो सकता है।"(3)

उद्देश्य

- समानता और गैर–भेदभाव : एआई तकनीक को सभी व्यक्तियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए, ताकि नस्ल, लिंग, आयु या अन्य विशेषताओं के आधार पर पक्षपात को रोका जा सके। यह कानून के तहत समान सुरक्षा को बढ़ावा देता है।
- गोपनीयता अधिकारः निगरानी तकनीक जैसी एआई तकनीकें व्यक्तियों के गोपनीयता अधिकारों का उल्लंघन कर सकती हैं। सार्वजनिक सुरक्षा और गोपनीयता के अधिकार के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।
- पारदर्शिता और जवाबदेहीः एआई के निर्णयों को संचालित करने वाले एल्गोरिदम पारदर्शी होने चाहिए। व्यक्तियों को एआई द्वारा लिए गए उन निर्णयों को समझने और चुनौती देने का अधिकार होना चाहिए जो उन्हें प्रभावित करते हैं।

परिकल्पना

- अनुपातहीन प्रभाव की परिकल्पना : एआई तकनीक हाशिए पर पड़े समुदायों को अनुपातहीन रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे जांच और निगरानी बढ़ जाती है, जो उनके नागरिक अधिकारों का उल्लंघन कर सकती है।
- पूर्वाग्रह सुदृढ़ीकरण की परिकल्पना : ऐतिहासिक डेटा पर प्रशिक्षित एआई एल्गोरिदम मौजूदा सामाजिक पूर्वाग्रहों को मजबूत करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भर्ती, पुलिसिंग और ऋण जैसे क्षेत्रों में भेदभावपूर्ण परिणाम सामने आते हैं।

चेहरे की पहचान(फेस रिकग्निशन)

"आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग करके फेस रिकग्निशन एक कंप्यूटर विजन तकनीक है जिसका उपयोग किसी व्यक्ति या वस्तु को किसी छवि या वीडियो से पहचानने के लिए किया जाता है। यह डीप लर्निंग, कंप्यूटर विजन एल्गोरिदम और छवि प्रसंस्करण सहित तकनीकों के संयोजन का उपयोग करता है। इन तकनीकों का उपयोग किसी प्रणाली को डिजिटल छवियों या वीडियो में चेहरों का पता लगाने, पहचानने और सत्यापित करने में सक्षम बनाने के लिए किया जाता है।"(4)

फेशियल रिकॉग्निशन प्रणाली भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 में प्रदत्त नागरिक अधिकारों पर अंकुश लगाती है। फेशियल रिकॉग्निशन प्रणाली वर्तमान में विकसित देशों में तेजी से उपयोग में लाई जा रही है।

"पूरे देश में, कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए एआई का उपयोग करती हैं, जो व्यक्तियों के नागरिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रताओं को प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से अप्रवासी और अल्पसंख्यक समुदायों के। हाल ही में एक समाचार में पता चला है कि आईसीई एक एल्गोरिदम का उपयोग करके विश्लेषण कर रहा है कि क्या सोशल मीडिया पोस्ट संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए ''अपमानजनक'' हैं और फिर उन आंकड़ों का उपयोग आव्रजन प्रवर्तन के लिए करता है।"[5] इसका उपयोग नौकरी के लिए साक्षात्कार से लेकर सुरक्षा कर्मियों द्वारा भी किया जा रहा है। नियुक्ति हेतु आवेदन कर्ता के चेहरे के भाव को पढ़कर उसके व्यक्तित्व के बारे में निर्णय लेता है। इससे कंपनी के नियुक्ति में लगने वाले समय की बचत होती है साथ ही यह दावा किया जाता है कि इससे साक्षात्कार में सामने आने वाले पूर्वाग्रह से भी बचा जा सकता है इससे कोई व्यक्ति अपने पूर्वाग्रह से ग्रसित होने के कारण नौकरी के लिए आए साक्षात्कार कर्ता की उपेक्षा ना करें किंतु ऐसे विभिन्न उदाहरण ज्ञात हुए हैं जहां यह सिद्ध हुआ है कि फैसियल रिकॉग्निशन प्रणाली हमेशा इस कार्य में सही सिद्ध नहीं हुई है।

"चेहरे की पहचान करने वाली तकनीक का उपयोग आव्रजन, पुलिसिंग और आवास जैसे उच्च–दांव वाले स्थानों में किया जा रहा है, जहां यह अश्वेत रंग के लोगों के साथ भेदभाव करती है, क्योंकि यह अश्वेत चेहरों की पहचान करने में कम सटीक है और इस प्रकार खतरनाक रूप से गलत निष्कर्ष निकालती है।''[6]

नियोक्ता नौकरी के आवेदकों के प्रदर्शन की भविष्यवाणी करने के लिए भी एआई का उपयोग करते हैं। एक उपकरण, हायरव्यू, का दावा है कि यह चेहरे के भाव, शब्द चयन और स्वर जैसे आभासी साक्षात्कारों के दौरान एकत्र किए गए डेटा बिंदुओं के आधार पर नौकरी के उम्मीदवारों की रोजगार योग्यता का आकलन कर सकता है। लेकिन चेहरे और आवाज पहचान तकनीकें गहरे रंग की त्वचा वाले लोगों के चेहरे और काले आवेदकों या उच्चारण वाले लोगों की आवाज का आकलन करते समय कम सटीक होती हैं। हायरव्यू विकलांग आवेदकों को भी नुकसान पहुंचा सकता है जिनके चेहरे के भाव या भाषण पैटर्न असामान्य हो सकते हैं।[4] कभी–कभी हमारे स्वयं का मोबाइल फोन भी हमारे स्वयं के चेहरे को नहीं पहचान पता है फिर एआई के लिए मनुष्य मुख्य चर उसमें पहले से मौजूद निर्देश होते हैं और निर्देश देने वाले भी मनुष्य ही होते हैं जिनमें पूर्व गृह से ग्रसित होने को भी नकारा नहीं जा सकता है। फैसियल रिकॉग्निशन प्रणाली का उपयोग हवाई अड्डों पर भी होता है जहां प्रवासी या अप्रवासी लोगों को वीजा प्राप्त करने में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। एशिया, अफ्रीका या लैटिन अमेरिका के नागरिकों को सुरक्षा कंपनियों द्वारा एआई के प्रयोग से और भी खतरनाक समस्याएं सामने आ रही हैं। कई बार सुरक्षा कर्मी द्वारा एआई के ठीक से ना पहचान के कारण निर्दोष व्यक्तियों को सजा का सामना तक करना पड़ गया है। "कानून प्रवर्तन द्वारा व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली चेहरे की पहचान करने वाली तकनीकें गैर–श्वेत चेहरों की पहचान करने में सटीकता की कमी रखती हैं, जिससे लैटिनो और अन्य रंग के लोगों को गलत मिलान के जोखिम में डाल दिया जाता है। ऐसी गलतियों के कारण अश्वेत अमेरिकीयों की गलत तरीके से गिरफ्तारी और कारावास की घटनाएं हुई हैं, जैसे कि डेट्रोइट में हाल ही में एक मामला जिसमें एक गर्भवती महिला को गिरफ्तार किया गया और एक दोषपूर्ण मिलान के आधार पर डकैती और कार चोरी के आरोप में आरोपित किया गया।''[8]

डीपफेक

"डीपफेक एक कृत्रिम छवि या वीडियो (छवियों की एक श्रृंखला) है जो एक विशेष प्रकार की मशीन लर्निंग द्वारा उत्पन्न होती है जिसे ''डीप'' लर्निंग कहा जाता है (इसलिए इसका नाम डीपफेक है)।"[9] "डीपफेक पहले सुविधाओं को एनकोडिंग करने के लिए उन्नत डीप लर्निंग तकनीकों का उपयोग करते हैं, फिर एनकोडेड सुविधाओं से छवियों का पुनर्निर्माण करते हैं। ऑटोएनकोडर, एक प्रकार का न्यूरल नेटवर्क, डीपफेक बनाने के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला डीप लर्निंग आर्किटेक्चर है।''[10]

डीप फेक के द्वारा वर्तमान में किसी व्यक्ति के छवि और वीडियो को एआई की मदद से नग्न फोटो में बदलकर या

फिर वीडियो को पोर्न साइट पर डालकर उसकी छवि को खराब किया जा सकता है। इससे आहत व्यक्ति के सामने स्वयं को दोषी समझना के अलावा और कोई उपाय नहीं बचता है। इसी प्रकार के एक मामले में "अपराधी ने हेलन की फोटो का इस्तेमाल किया था। जो उसके बंद हो चुके फेसबुक और निजी इंस्टाग्राम अकाउंट से ली गई थी जिसमें उसकी किशोरी और गर्भावस्था के दौरान की तस्वीर भी शामिल थी फिर उन्होंने उसे हिंसक सामूहिक बलात्कार की पीड़िता के रूप में चित्रित करने के लिए डिजिटल संपादन एआई का उपयोग किया था। तस्वीरों के नीचे एक पोस्ट में उन्होंने लिखा था यह मेरी गर्लफ्रेंड हेलेन है। मैं उसे अपमानित इस्तेमाल और दुर्व्यवहार करते हुए देखना चाहता हूं और यह यहां कुछ विचार है।"(11)

एआई वीडियो या फोटो को इतने सटीकता से कार्यान्वित करती है कि उसकी पहचान कर पाना कठिन होता है। नेटवर्क नेट जर्नी एंड चैट जीपीटी, इनके द्वारा फोटो और वीडियो को इतने अच्छे से परिवर्तित किया जाता है जितना की कोई विशेषज्ञ भी ना कर पाए। साथ ही यह कम कीमत में किया जा सकता है। जहां इसकी सहायता से मनोरंजन का भविष्य बदलने वाला है तो वही मानव जीवन को भी काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

" तमिल टाइगर्स के उग्रवादी प्रमुख वेलुपिल्लई प्रभाकरण की बेटी दुवारका के रूप में पेश की गई एक महिला भाषण दे रही थी। समस्या यह थी कि दुवारका की मृत्यु एक दशक से भी पहले, श्रीलंकाई गृहयुद्ध के अंतिम दिनों में 2009 में हवाई हमले में हो चुकी थी। उस समय 23 वर्षीय दुवारका का शव कभी नहीं मिला। और अब, वह यहाँ थी – एक मध्यम आयु वर्ग की महिला – दुनिया भर के तमिलों को उनकी स्वतंत्रता के लिए राजनीतिक संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रही थी।

दक्षिणी भारतीय राज्य तमिलनाडु में एक तथ्य–जांचकर्ता श्री चिन्नादुरई ने वीडियो को बारीकी से देखा, वीडियो में गड़बड़ियाँ देखीं और जल्द ही इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) द्वारा उत्पन्न एक आकृति के रूप में पहचाना।''(12)

भारत के 18वीं लोकसभा चुनाव के दौरान एआई टूल की सहायता से भारतीय चुनाव को भ्रमण करने की कोशिश की गई प्रमुख राजनीतिक दलों के व्यक्तियों के भाषण की वीडियो बनाकर उनको मुक्त धारा के मीडिया में तेजी से फैलने में पूरी समस्या उत्पन्न नहीं हुई। देश के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुरैशी कहते हैं, ''अफवाहें हमेशा से ही चुनाव प्रचार का हिस्सा रही हैं। लेकिन सोशल मीडिया के युग में ये जंगल की आग की तरह फैल सकती हैं।''(13)

पूर्व चुनाव आयुक्त का यह बयान एआई तकनीक के से उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर सच ही जान करता है। "चुनाव के दौरान बॉलीवुड अभिनेता रणबीर कपूर का आमिर खान के द्वारा विपक्षी दलों के लिए चुनाव प्रचार करने के वीडियो वायरल हुई वहीं 29 अप्रैल को प्रधानमंत्री मोदी ने सत्ताधारी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के भाषणों को आई द्वारा बदलने पर चिंता व्यक्त की कि इस तरह की चिंता विपक्षी पार्टियों ने भी व्यक्त की है।"(14)

राजनीतिक में एआई का उपयोग सिर्फ भारत ही नहीं वरन् दुनिया के अन्य देशों में भी किया जाने लगा है।

"पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने शनिवार को हुए राष्ट्रीय चुनाव में जीत की घोषणा एक जनरेटिव एआई–निर्मित डीपफेक वीडियो और सिंथेटिक आवाज का उपयोग करके की। खान ने चुनाव अभियान के दौरान जेल में समय बिताया और उन्हें चुनाव में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया गया, लेकिन उन्होंने अभियान भाषण देने के लिए सिंथेटिक मीडिया का इस्तेमाल किया और अब सिंथेटिक ऑडियो स्टार्टअप इलेवनलैब्स की तकनीक का उपयोग करके वॉयस क्लोन बनाकर जीत का भाषण दिया।''(15)

डीप फेक के द्वारा चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी दलों के विरुद्ध राजनीतिक बढ़त हासिल की जा सकती है और एआई तकनीक इस मामले में सबसे कारगर सिद्ध होती है जो कि राजनीतिक लोकतंत्र के लिए एक भयावह स्थिति उत्पन्न कर सकती है।

भविष्यवाणी / निर्णय लेना

"पूर्वानुमानित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक कंप्यूटर प्रोग्राम की सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग करके पैटर्न की पहचान करने, व्यवहारों का अनुमान लगाने और भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने की क्षमता है। सांख्यिकी के क्षेत्र का उपयोग लंबे समय से भविष्य के बारे में पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता रहा है। पूर्वानुमानित एआई

मशीन लर्निंग और विशाल मात्रा में डेटा तक पहुँच के माध्यम से सांख्यिकीय विश्लेषण को तेज और (सैद्धांतिक रूप से) अधिक सटीक बनाता है।"[16]

"कई संदर्भों में, सरकार द्वारा कार्यकुशलता बढ़ाने और निर्णय लेने में सहायता के लिए स्वचालित उपकरणों का उपयोग उचित है। हालाँकि, उनके निर्माण, निरीक्षण और तैनाती में मनुष्यों की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं। लोकतांत्रिक भागीदारी के बिना, हमारे पास यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता असमानता को न बढ़ाए और मानव एजेंसी को बाधित न करे – संभवतः, हमारे जाने बिना।''[17]

एआई प्रणाली के तीव्र गति से उपयोग में लाने की एक प्रमुख कारण इसकी निर्णय लेने की क्षमता है उसमें आंकड़ों का उपयोग करके यह बताया जा सकता है कि भविष्य में क्या–क्या हो सकता है। एआई प्रणाली की एल्गोरिथम मनुष्यों की तरह पक्षपाती रूप में कार्य नहीं करती है।

बचपन में हम लोगों ने घर पर सुना है कि खेलोगे कूदोगे तो बनोगे गवार और पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब। एआई प्रणाली भी कुछ इसी तरह अनुमान पर कार्य करती है किंतु ऐसे विभिन्न उदाहरण ज्ञात हैं जिनमें जिन्होंने सिद्ध किया है कि खेलने से भी जिंदगी बेहतर बनाई जा सकती है और यह भी आवश्यक नहीं की हमेशा पढ़ने से ही जीवन बेहतर हो। एआई की अनुमान प्रणाली दिए गए निर्देश पर निर्भर करता है किंतु मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह क्या करेगा या क्या सोचता है। इसे निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता है। एआई तकनीकी मदद से डच सरकार द्वारा यह अनुमान लगाना की कौन–कौन आगे जाकर अपराधी बनेगा, ने जाने कितनों की जिंदगी बर्बाद कर दी।

"कुल मिलाकर प्रणाम सबसे अच्छे लग रहे थे खासकर जब उन व्यक्तियों और परिवारों पर प्रभाव के मुकाबले तोला गया जिन्हें प्रयोग में भाग लेने के लिए मजबूर किया गया था। डच मानवविज्ञानी पॉल मुत्सर्स ने देश भर में उपयोग में आने वाले एआई टूल सहित कई पुलिसिंग सॉफ्टवेयर के प्रभाव का अध्ययन करने में बरसों बिताए। अपने शोध के दौरान मुत्सर्स पुलिस के साथ थे। जब वे एम्सटर्डम वेस्ट जैसे शहर के अंदरूनी इलाकों में गश्त कर रहे थे, स्टेशन प्रमुख के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने स्वीकार किया कि जिले के सभी शीर्ष 600 किशोर जातीय अल्पसंख्यक समूह के थे। उन्होंने मुझसे कहा बेशक उनके पकड़े जाने का खतरा कहीं अधिक है क्योंकि हम हर समय उन पर नजर रखते हैं।"[18]

"सिद्धांत यह है कि अपराधों के बाद परिणाम से निपटने की तुलना में पूर्व अनुमानित पुलिसिंग एल्गोरिथम सीमित संसाधनों को आवंटित करने का एक सस्ता और अधिक कुशल तरीका है।"[19]

"इसका परीक्षण करने के लिए आई प्रणालियों का व्यापक रूप से प्रयोग किया जा रहा है कि उनके उपयोग में ब्रिटेन में सामूहिक हिंसा पर कड़ी नजर करने[20], जर्मनी में संभावित आतंकवादियों का चयन करने[21] और संयुक्त राज्य अमेरिका में परिवारों के बीच घरेलू हिंसा की भविष्यवाणी करने के लिए किया गया है। दूसरा अपराधियों में दोबारा अपराध की भविष्यवाणी करने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिथम का परीक्षण उपकरण के रूप में किया जा रहा है। सजा संबंधी निर्णय का मार्गदर्शन करना और यह तय करने में हिरासत अधिकारियों की सहायता करना की जमानत किसे देनी चाहिए लेकिन जूरी इस बात से असमर्थ है कि वह कितना अच्छा काम करते हैं।

"इस बीच इस बात के सबूत हैं कि वे अनजाने में या जानबूझकर नस्लवादी हो सकते हैं। यहां तक की जहां एल्गोरिथम की निर्णय लेने की प्रक्रिया में नस्ल पर विचार नहीं किया जाता है। वह प्रोक्सी वेरिएबल पिछली गिरफ्तारियां, हिंसा देखना एक, निश्चित पड़ोस में रहना या बस गरीब होना को एआई और अन्य संख्या की प्रणालियों में निर्गत के रूप में फीड किया जाता है, जो संस्थागत राष्ट्रीय बल का प्रचार करते हैं। पब्लिक ने फ्लोरिडा में 7000 से अधिक गिरफ्तार लोगों के लिए कंपास भविष्यवाणियों का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकला कि यह एक नस्लवादी एल्गोरिथम था।"[22]

"पल्स(नाड़ी) ऑक्सीमीटर त्वचा में मेलानिन के विभिन्न स्तरों का कारण नहीं बनता है और अध्ययनों से पता चला है कि पल्स(नाड़ी) ऑक्सीमीटर गहरे रंग के व्यक्तियों के साथ उनकी त्वचा द्वारा अधिक रंग अवशोषित करने के कारण उसने अच्छे से काम नहीं करता जितना कि कम गहरी त्वचा के रंग वाले व्यक्ति के साथ करता है।"[23]

इसी तरह दक्षिण अमेरिका के अर्जेंटीना में साल्टा क्षेत्र की 18 से कम उम्र की लड़कियों के गर्भधारण रोकने हेतु

एआई का सहारा लिया गया। उसके साथ ही आई का उपयोग कम उम्र में गर्भधारण करने से रोकने के उपाय के साथ–साथ उसके आर्थिक स्तर को भी बेहतर बनाना । साल्टा में एआई तकनीक से बनाया गया जो यह बताने में संभव था कि कौन सी लड़की आने वाले समय में या वर्तमान में गर्भधारण कर सकती है। इस समस्या को सुलझाने के लिए एकत्रित किए गए आंकड़ों के तरीका पर भी सवाल उठाए जा सकते है।

"अधिक सूक्ष्म समस्या सत्य का पता लगाने से संबंधित है। आंकड़े की संवेदनशील प्रकृति के कारण यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं था कि लड़कियां या उनके परिवार पिछली या वर्तमान गर्भधारण के बारे में सच बता रहे थे। विशेषकर यदि वे गर्भपात पर विचार कर रहे थे। वास्तव में इसकी अत्यधिक संभावना थी कि वह झूठ बोल रहे थे क्योंकि उस समय अर्जेंटीना में गर्भपात अवैध था। इसका मतलब यह था कि प्रशिक्षण आंकड़े संगृह पहले से ही पक्षपाती था। इसे ठीक करने का कोई तरीका नहीं था तो आप इसकी भविष्यवाणियों पर कैसे भरोसा कर सकते हैं।"[24]

किंतु एआई इस तरह के किसी के अतीत के आंकड़ों के आधार पर उसके भविष्य को रेखांकित करता है उसे तरह के निर्देश को काफी सचमुच किसी के भी भविष्य को बर्बाद किया जा सकता है।

एआई प्रणाली के पक्षपाती रवैया की वजह से समय पर आवश्यक चिकित्सा न मिलने के कारण आवश्य लोगों को अपनी जान जवानी पड़ जाती है। जिनकी जान को आसानी से बचाया जा सकता है। "यह प्रणाली अपनी डिजाइन से ही पक्ष पाती है। 2020 में मिशिगन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया कि इस प्रणाली ने 12 प्रतिशत अश्वेत लोगों को उनके रक्त में सुरक्षित स्तर से भी कम ऑक्सीजन होने पर भी उन्हें आश्वासन दिलाया कि ऑक्सीजन के स्तर ठीक है।"[25]

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व्यक्ति के लिए विभिन्न अवसरों को साथ लेकर आई है। इन अवसरों के साथ–साथ कई समस्याएं भी साथ लाई है, जिन पर विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा चिंता व्यक्त की गई है। "संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त मिशेल बाचेलेट ने माना कि एआई ''अच्छाई के लिए एक शक्ति'' हो सकती है, लेकिन अगर इससे उत्पन्न खतरों का समाधान नहीं किया गया तो इसके ''नकारात्मक, यहां तक कि विनाशकारी प्रभाव'' भी हो सकते हैं।"[26] एआई की मदद से जहां व्यक्ति को उसके कामों में आसानी होती है वहीं पर गलत व्यक्ति के हाथों में यह शक्ति होने पर समाज का नुकसान संभव है। "आईबीएम के एक सर्वेक्षण के अनुसार, अधिकांश भारतीय सीईओ का मानना है कि संगठनों के भीतर प्रभावी एआई शासन के बिना विश्वसनीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एकीकृत करना संभव नहीं है।''[27] इसलिए आवश्यक है कि एआई कि जहां आवश्यकता हो एक सीमा स्पष्ट की जाए और उसे सीमा के बाहर होने पर उसे पर शक्ति से कार्रवाई की जाए जिससे मानव अधिकारों के हनन को रोका जा सके साथ ही विभिन्न सार्वभौमिक नियम कानून बनाए जाएं जो आई को पूर्णता और सूक्ष्मता से स्पष्ट करें। "नस्लीय न्याय कार्यक्रम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की प्रणालीगत नस्लवाद और अन्य असमानताओं को बनाए रखने और बढ़ाने की शक्ति को चुनौती देने के लिए मुकदमेबाजी और वकालत में संलग्न है, और विशेष रूप से रोजगार, आवास और ऋण के क्षेत्रों में अधिक न्यायसंगत प्रणालियों के निर्माण की दिशा में काम करता है।''[28] इसके जैसी और संस्थाओं की आवश्यकता है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से समाज को बचा सकें।

संदर्भ सूची

1ए ब्वनदबपस वि्मनतवचम थ्तंउमूवता ब्वदअमदजपवद वद ।तजपपिबपंस प्दजमससपहमदबम ॅदक भ्नउंद त्पहीजेए क्मउवबतंबलए ॅदक जीम त्नसम वि सूं ए श्रनदम 3ए 2024 ीजजचेरूध्ध्ूूूण्हपइेवदकनददण्बवउध्बवनदबपस.वि.मनतवचम.तिंउमूवता.बवदअमदजपवद.वद.ंतजपपिबपंस.पदजमससपहमदबम.ंदक.ीनउंद.तपहीजे.कमउवबतंबल.ंदक.तनसम.वि.

सूंध्रुरू्रूजमगजत्रजीम:20ब्वदअमदजपवद:20पे:20पद:20सपदमएचतमकपबजपवदे:2є20बवदजमदज:2є20तमबवउउमदकंजपवदे:2є20वत
2ण ेउपजं त्रउवींद ए छंअपहंजपदह जीम प्दजमतेमबजपवद वि भ्नउंद त्पहीजे ंदक ।प् पद प्दकपंए थ्मइ 19ए 2024एीजजचेरू्ध्ध्पदकपंपण्हवअण्पदध्ंतजपबसमध्दंअपहंजपदह.जीम.पदजमतेमबजपवद.विं.निउंद.तपहीजे.ंदक.प.पद.पदकपं
3ण ।तजपपिबपंस प्दजमससपहमदबम ंदक ब्पअपस त्पहीजेए श्रनसल 11ए 2024एीजजचेरू्ध्ध्रनेजपबमण्हवअ्ध्बतजध्परुरू्रूजमगजत्र ।प्20जमबीदवसवहपमे:20तम:20नेमक:20जवएवि:20 ।प्20दक:20बपअपस:20तपहीजेण
4ण ीजजचेरू्ध्ध्ण्उमततपंउ्.मइेजमतण्बवउध्कपबजपवदंतलध्कममचिंम
5ण थ्पं च्जमस — श्रनसपंद डंसमदकपए ।कअंदबमे पद ।प् प्दबतमेंम त्पौ वि ळवअमतदउमदज ेवबपंस डमकपं डवदपजवतपदह ए श्रंदनंतल 4ए 2024 एीजजचेरू्ध्ध्ण्इतमददंदबमदजमतण्वतहध्वनत्.वताध्ंदसलेपे.वचपदपवदध्कअंदबमे.प.पदबतमेंम.तपौ.हवअमतदउमदजे.वबपंस.उमकपं.उवदपजवतपदह
6ण त्मसिमबजपवदे वद ब्पअपस त्पहीजे ंदक ल्नत ।प् थ्नजनतमण ।चतपसए18 2023णीजजचेरू्ध्ध्बपअपसतपहीजेण्वतहध्इसवहध्तमसिमबजपवदे.वद.बपअपस.तपहीजे.ंदक.वनत.प.निजनतमध्
7ण थ्पं च्जमस — श्रनसपंद डंसमदकपए ।कअंदबमे पद ।प् प्दबतमेंम त्पौ वि ळवअमतदउमदज ेवबपंस डमकपं डवदपजवतपदह ए श्रंदनंतल 4ए 2024 एीजजचेरू्ध्ध्ण्इतमददंदबमदजमतण्वतहध्वनत्.वताध्ंदसलेपे.वचपदपवदध्कअंदबमे.प.पदबतमेंम.तपौ.हवअमतदउमदजे.वबपंस.उमकपं.उवदपजवतपदह
8ण थ्पं च्जमस — श्रनसपंद डंसमदकपए ।कअंदबमे पद ।प् प्दबतमेंम त्पौ वि ळवअमतदउमदज ेवबपंस डमकपं डवदपजवतपदह ए श्रंदनंतल 4ए 2024 एीजजचेरू्ध्ध्ण्इतमददंदबमदजमतण्वतहध्वनत्.वताध्ंदसलेपे.वचपदपवदध्कअंदबमे.प.पदबतमेंम.तपौ.हवअमतदउमदजे.वबपंस.उमकपं.उवदपजवतपदह
9ण श्रलम ॅजमसस.त्पबोवदण ॅींज पे क्ममचंिमघ ।चत 04ए 2024णीजजचेरू्ध्ध्इनपसजपदण्बवउध्उंबीपदम.समंतदपदहध्कममचंिम
10ण डमतमकपजी ेवउमतेए क्ममचंिमेए म्गचसंपदमकश्ए डप्ज् ेसवंद डंदंहमउमदज त्मअपमूए श्रनसल 21ए 2020ए ीजजचेरू्ध्ध्उपजेसवंदण्उपजण्मकनध्पकमें.उंकम.जव.उंजजमतध्कममचंिमे.मगचसंपदमकरुरू.
रूजमगजत्रजीम:20जमतउ:20
:म्2:80:9क्कममचंिम:म्2:80:9क:20्ं:20पितेजएवचमद:20
ेवनतबम:20बिम:2वूंचचपदह:20जमबीदवसवहलण
11ण त्मपब भ्स ेबींतज्रण क्ममचंिम विश्रंपसमक चंपेजंदप म्ग.च्तपउम डपदपेजमत प्उतंद ज्ञींद क्मबसंतमे टपबजवतल पद म्समबजपवदण थ्मइतनंतल 12ए 2024णीजजचेरू्ध्ध्अवपबमइवजण्पध्2024ध्02ध्12ध्कममचंिम.विंपसमक.चंपेजंदप.मग.चतपउम.उपदपेजमत.पउतंद.ींद.कमबसंतमे.अपबजवतल.पद.मसमबजपवदध्
12ण डमतलस ेमइेजपंदण ।प् ंदक कममचंिम इसनत तमंसपजल पद प्दकपं मसमबजपवदेण ठठब् छमूेए ड्वबीपण 16 डंल 2024णीजजचेरू्ध्ध्ण्इइबण्बवउध्दमूेध्वतसक.पं.पदकपं.68918330
13ण डमतलस ेमइेजपंदण ।प् ंदक कममचंिम इसनत तमंसपजल पद प्दकपं मसमबजपवदेण ठठब् छमूेए ड्वबीपण 16 डंल 2024णीजजचेरू्ध्ध्ण्इइबण्बवउध्दमूेध्वतसक.पं.पदकपं.68918330
14ण डमतलस ेमइेजपंदण ।प् ंदक कममचंिम इसनत तमंसपजल पद प्दकपं मसमबजपवदेण ठठब् छमूेए ड्वबीपण 16 डंल 2024णीजजचेरू्ध्ध्ण्इइबण्बवउध्दमूेध्वतसक.पं.पदकपं.68918330
15ण त्मपब भ्स ेबींतज्रण क्ममचंिम विश्रंपसमक चंपेजंदप म्ग.च्तपउम डपदपेजमत प्उतंद ज्ञींद क्मबसंतमे टपबजवतल पद म्समबजपवदण थ्मइतनंतल 12ए 2024णीजजचेरू्ध्ध्अवपबमइवजण्पध्2024ध्02ध्12ध्कममचंिम.विंपसमक.चंपेजंदप.मग.चतपउम.उपदपेजमत.पउतंद.ींद.कमबसंतमे.अपबजवतल.पद.मसमबजपवदध्
16णीजजचेरू्ध्ध्ण्बसवनकसिंतमण्बवउध्मद.हइध्समंतदपदहध्पध्ींज.पे.चतमकपबजपअम.पध्

17ण ब्मदजमत वित ब्पअपस त्पहीजे ंदक ज्मबीदवसवहल त्मेवनतबमेण |चतपसए18 2024ण ीजजचेरूध्ध्बपअपसतपहीजेण्वतहध्इसवहध्तमसिमबजपवदे.वद.बपअपस.तपहीजे.ंदक.वनत.प.निजनतमध्
18ण च्नस डनजेंमते ंदक ज्वउ अंद छनमदमदए श्च्तमकपबजपअमसल च्वसपबमकरू जीम क्नजबी ब्| ब्म ंदक प्जे थ्वतमतनददमतेश्ए पद च्वसपबपदह त्बमए म्जीदपबपजल ंदक ब्नसजनतमए मकण श्रंद ठममा मज ंसण ;डंदबीमेजमत न्दपअमतेपजल च्तमेए 2023द्धए ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्1 0ण7765ध्9781526165596ण00010ण
19ण डनतहपंएडंकीनउपजंण ब्वकम क्मचमदकमदज ण्ध्हम 138ण
20ण पैउंमस डनहंतप ंदक म्उमां म्ण ञ्पवीए श्च्तमकपबजपअम च्वसपबपदह ंदक ब्तपउम ब्वदजतवस पद जीम न्दपजमक ैजंजमे वि |उमतपबं ंदक म्नतवचमरू ज्तमदके पद ं क्मबंकम वि त्मेमंतबी ंदक जीम थ्नजनतम वि च्तमकपबजपअम च्वसपबपदहश्ए ैवबपंस ैबपमदबमे 10ए दवण 6 ;श्रनदम 20ए 2021द्धरू 234ए ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण3390ध्ेवबेबप10060234ण
21ण झंजीसममद डबञ्मदकतपबाए श् |तजपपिबपंस प्दजमससपहमदबम च्तमकपबजपवद ंदक ब्वनदजमतजमततवतपेउश्ए |नहनेज 2019ए ीजजचेरूध्ध्ूूूणबींजींउीवनेमण्वतहध्पजमेध् कमनिसजधपिसमेध्2019.08.07. |प्ब्वनदजमतजमततवतपेउण्चकि
22ण श्रनसपं |दहूपद मज ंसण्ए श्डंबीपदम ठपेंए च्तवच्नइसपबंए डंल 23ए 2016ए ीजजचेरूध्ध् ूूणचतवचनइसपबंण्वतहध्ंतजपबसमध्ंबीपदम.इपें.तपेा.ेउमदजे.पद.बतपउपदंस. ेमदजमदबपदहण
23ण |द डण ब्ंदंए च्पसंत डंतजद्द.म्बनकमतवए ंदक ञ्पता भ्ण ैीमससमलए श्प्उचतवअपदह च्नसेम व्गपउमजतल |बबनतंबल पद क्ंतां.ापददमक च्ंजपमदजेरू ज्मबीदपबंस ेचमबजे ंदक ब्नततमदज त्महनसंजपवदेश्ए ठतपजपी श्रवनतदंस वि |दंमेजीमेपं 131ए दवण 4 ;व्बजवइमत 2023द्धरू 640.44ए ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण1016ध्रण्इरंण्2023ण07ण005ण
24ण डनतहपंएडंकीनउपजंण ब्वकम क्मचमदकमदज ण्ध्हम 174
25ण डपबींमस ॅण ैरवकपदह मज ंसण्ए श्त्बपंस ठपें पद च्नसेम व्गपउमजतल डमेंनतमउमदजश्ए छमू म्दहसंदक श्रवनतदंस वि डमकपबपदम 383ए दवण 25 ;क्मबमउइमत 17ए 2020द्धरू 2477.78ए ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण1056ध्छम्श्रडéb2029240ण
26ण थ्पद ैजतंजीमतदण न्छ बंससे वित ष्नतहमदजष् ंबजपवद वअमत |प्ेे तपेा जव ीनउंद तपहीजेण् ैमचजमउइमत 17ए 2021णीजजचेरूध्ध्ूूूण्ंतजपपिबपंसपदजमससपहमदबम.दमूेण्बवउध्2021ध09ध17ध्नद.बंससे.वित.नतहमदज.ंबजपवद.वअमत. ंपे.तपेा.जव.ीनउंद.तपहीजेध्
27ण स्वनपें ॅ― स्पदह थ्ंदहण प्दजमतदमज मगचमतपमदबम ंदक जपउम कपेचसंबमउमदज वि जतंकपजपवदंस दमूे उमकपं नेमरू |द ंचचसपबंजपवद वि जीम जीमवतल वि जीम दपबीमण ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण1016ध्रण्जमसमण्2011ण06ण001ए डंल 2ए 2012णप्दजमतदमज मगचमतपमदबम ंदक जपउम कपेचसंबमउमदज वि जतंकपजपवदंस दमूे उमकपं नेमरू |द ंचचसपबंजपवद वि जीम जीमवतल वि जीम दपबीम . ैबपमदबमक्पतमबज
28ण |बबवनदजंइपसपजल पद |तजपपिबपंस प्दजमससपहमदबमणीजजचेरूध्ध्ूूूणबसनण्वतहध्ेनमेध्तंबपंस. रनेजपबमध्ंबबवनदजंइपसपजल.पद.तजपपिबपंस.पदजमससपहमदबम